13 नली-कली : कर्नाटक के प्राथमिक स्कूलों में

पद्मजा एम. आर.

शिक्षा ठहरे हुए पानी का तालाब नहीं है। उसमें हमेशा प्रवाह बना रहता है। अपने प्रवाह के साथ वह अनेक विचारों, तकनीकों और नवाचारों को समेटती चलती है और शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण की ओर बढ़ती जाती है। उत्कृष्ट शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयोगों में नली–कली या आनन्दपूर्ण शिक्षण एक अनूठी अवधारणा है। यह बच्चे पर केन्द्रित, गतिविधि पर आधारित शिक्षण है जो बच्चों को स्कूली शिक्षा हासिल करने के साथ–साथ मूल्यों को जज्ब करने में मदद करती है। नली–कली बच्चों के लिए वह माकूल वातावरण तैयार करता है जिसमें बच्चे आत्मीय और सरस तरीके से आहिस्ता–आहिस्ता सीखते चलते हैं।

नली–कली की अवधारणा मैसूर जिले के हेग्गड़ादेवनकोट तालुक के एक छोटे से गाँव में जन्मी और दूसरे इलाकों में फैलती चली गई। जैसे–जैसे इसका प्रसार होता गया वैसे–वैसे यह नए विचारों तथा परिवर्तनों के साथ नया रूप लेती गई और आज इसे कर्नाटक के तमाम प्राथमिक स्कूलों में लागू किया जा चुका है। इस शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत कक्षा 1, 2 और 3 के बच्चों को शामिल किया गया है।

नली–कली के मुख्य आकर्षण :

- बहुस्तरीय शिक्षण
- उत्कृष्ट शिक्षा
- स्वत: शिक्षण
- अपनी ही गति से सीखना
- आनन्दपूर्ण शिक्षण

नली–कली की कक्षाएँ

नली कली की कक्षाएँ अनूठी और आम कक्षाओं से अलग होती हैं। कक्षा शुरू होने से पहले शिक्षण सामग्री की व्यवस्था करना और उसको तैयार रखना जरूरी होता है।

कक्षा के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री और उसका संक्षिप्त वर्णन :

1- शिक्षण कार्ड

इन कार्डों में शिक्षण सामग्री के छोटे–छोटे अंश होते हैं। कार्डों को नली–कली कक्षाओं में रखा जाता है और उनको कक्षा, विषय तथा सीखी गई अवधारणा के माइलस्टोन के मुताबिक अलग–अलग स्थलों पर जमाया जाता है। ये शिक्षण कार्ड कर्नाटक सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं।

2- प्रगति चार्ट

ये चार्ट भी विभाग द्वारा ही मुहैया कराए जाते हैं और इनको विषय और कक्षा के मुताबिक प्रस्तुत किया जाता है। इनमें सीखी गई अवधारणा के माइलस्टोन और प्रतीक–चिह्नों के अनुसार सोपान संख्याएँ दी हुई होती हैं। प्रत्येक माइलस्टोन तक बच्चे की पहुँच उसकी काबिलियत तथा उसके द्वारा अर्जित ज्ञान को दर्शाती है। बच्चों को इन चार्ट में अपनी प्रगति को चिह्नित करना होता है और यह प्रगति चार्ट हर बच्चे के लिए एक अहम दस्तावेज होता है।

3- समूह डिस्क

इन डिस्कों में यह सूचना दर्ज होती है कि किस समूह द्वारा किसके निरीक्षण में कौन–सी गतिविधि की जानी है। पाँच समूहों में से प्रत्येक समूह के लिए डिस्क होती हैं: कक्षा

1, 2 और 3 के लिए भाषा, गणित तथा पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययन के लिए। हर डिस्क एक समूह, समूह–संख्या, समूह के निरीक्षक और उस समूह की गतिविधि को दर्शाने वाले प्रतीक–चिह्न का प्रतिनिधित्व करती है।

गतिविधियाँ इस प्रकार सम्पन्न की जाती हैं :

- अध्यापक की आंशिक मदद से
- अध्यापक की पूरी मदद से
- साथी की पूरी मदद से
- साथी की आंशिक मदद से
- खुद सीखकर

जो गतिविधियाँ सामूहिक होती हैं उनको समूह डिस्कों पर प्रतीक–चिह्न के माध्यम से नहीं दर्शाया जाता। हर गतिविधि को एक प्रतीक–चिह्न दिया गया है जिसे शिक्षण सामग्री – कार्ड, कार्य–पुस्तिका, रीडर – के बाएँ कोने पर प्रदर्शित किया जाता है। यही प्रतीक–चिह्न प्रगति–चार्ट तथा समूह डिस्कों पर भी प्रदर्शित होता है।

भाषाओं में, प्रतीक चिह्नों के रूप में जानवरों का उपयोग किया जाता है और गणित में पक्षियों का उपयोग प्रतीक चिह्नों के रूप में किया जाता है। पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययनों में कीड़ों का उपयोग प्रतीक–चिह्नों के रूप में होता है। ये प्रतीक–चिह्न प्रगति–चार्ट में अपनी जगह चिह्नित करने में और सम्बन्धित शिक्षण सामग्री चुनकर समूह के भीतर अपनी जगह जाकर बैठने में बच्चे की मदद करते हैं।

4- अध्ययन ग्रिड

कक्षा की छत से चार फुट नीचे तक तार लटके होते हैं जिन पर बच्चों द्वारा की गई हस्तशिल्प सम्बन्धी गतिविधियों के दौरान तैयार की गई चीजें लटकी होती हैं। ये बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने में मदद करती हैं।

5- दीवार की स्लेट

यह कक्षा की चारों दीवारों तक फैला हुआ चार फुट ऊँचा एक ब्लैकबोर्ड होता है, जिसका एक हिस्सा हर बच्चे को सौंप दिया जाता है। इसको दीवार स्लेट के नाम से पुकारा जाता है। इसका इस्तेमाल बच्चे अपने अभ्यास के तौर पर जोड़–फल निकालने या वाक्य लिखने के लिए करते हैं।

6- मौसम चार्ट

इस पर बच्चे प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम को मौसम का निरीक्षण कर मौसम के प्रकार को चिह्नित करते हैं। इससे प्रत्येक माह का मौसम चार्ट तैयार करने में मदद मिलती है।

7- कार्य पुस्तिकाएँ

कक्षा 1, 2 और 3 के लिए तथा प्रत्येक कक्षा के भाषाओं के रीडरों के लिए सरकार कार्य पुस्तिकाएँ उपलब्ध कराती है। इनको विषय और कक्षा के अनुसार संयोजित किया जाता है। जब सारे माइलस्टोन हासिल कर लिए जाते हैं तब बच्चे स्वत: शिक्षण प्रक्रिया के दौरान और मूल्यांकन के दौरान पुस्तिकाओं को पढ़ते हैं।

8- शिक्षण–अध्ययन सामग्री

गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए जरूरी सामग्री फ्लैश कार्ड, गोटियाँ, गुरिए, कंकड़, छड़ियाँ, कठपुतलियाँ, परदे, मुखौटे तथा हस्तशिल्प सम्बन्धी गतिविधियों के लिए जरूरी सामग्री माइलस्टोनों के मुताबिक संयोजित की गई है। इस सारी सामग्री का आसानी के साथ बच्चों की पहुँच में होना जरूरी है।

कक्षाओं को सम्हालने का ढंग

चूँकि इस शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा 1, 2 और 3 आपस में मिला दी गई होती हैं, इसलिए कक्षा को सम्हालने का ढंग यहाँ एकदम अलग होता है। हमारे स्कूल में कक्षा 1, 2 और 3 के कुल मिलाकर 96 विद्यार्थी हैं। हमने उनको 32–32 के तीन बराबर भागों में बाँट दिया है। नली–कली शिक्षकों के रूप में हम तीन अध्यापिकाएँ इन तीनों हिस्सों को सम्हालती हैं। हर पीरियड 80 मिनिट का होता है और

हर दिन 4 पीरियड होते हैं – पहला पीरियड कन्नड़ का, दूसरा गणित का, तीसरा पर्यावरण–अध्ययन का और चौथा रेडियो शिक्षण और अँग्रेजी का।

दिन की शुरुआत ध्यान करने के साथ होती है जिसके लिए बच्चे एक वृत्त बनाकर बैठते हैं। दूसरी गतिविधि चार्ट में मौसम को चिह्नित करने की होती है। और उसके बाद नीचे अंकित अनुसार गतिविधियाँ शुरू होती हैं :

- प्रगति चार्ट के अनुसार गाने, बजाने, कहानी सुनाने, तस्वीरें पहचानने आदि गतिविधियों के लिए बच्चों का चयन करना और उनको उन गतिविधियों में लगाना।

- प्रगति चार्ट में बच्चों की प्रगति को चिह्नित करना।
- एक बच्चे से समूह डिस्क को फर्श पर रखने को कहना।
- बच्चों को उनकी कक्षा और विषय के मुताबिक उस पीरियड के विषय से सम्बन्धित प्रगति चार्ट के सामने कतार में खड़ा करना और उनसे उनके अध्ययन की स्थिति की तथा अगली गतिविधि के प्रतीक–चिह्न की पहचान करवाना।

- प्रगति चार्ट में की गई एन्ट्री के अनुसार अध्ययन सामग्री उठाकर बच्चे को सम्बन्धित समूह में बैठने को कहना।

- इसके बाद अध्यापक अपना अध्यापन शुरू करता है और सबसे पहले स्वत:—अध्ययन समूहों का मार्गदर्शन करता है। इसके बाद उस समूह में जाकर बैठ जाता है जो अपने अध्ययन के लिए पूरी तरह से अध्यापक पर निर्भर है और उस समूह के बच्चों को सम्हालता है। मार्गदर्शन का मतलब है इस बारे में सलाह देना कि कौन विद्यार्थी कौन—सी गतिविधि किस तरह से करेगा; कौन किसकी किस तरह से मदद करेगा।
- अध्यापक लगातार इस बात का ध्यान रखते हैं कि सारे समूह किसी न किसी गतिविधि में मशगूल हों।
- अध्ययन को सुनिश्चित कर लेने तथा गतिविधि के सन्तोषजनक तरीके से पूरा हो जाने के बाद प्रगति कार्ड में बच्चे की प्रगति को दर्ज किया जाना और अगले दिन की गतिविधि की तरफ बच्चे का ध्यान आकर्षित किया जाना जरूरी होता है। अगर किसी बच्चे ने गतिविधि को सन्तोषजनक तरीके से पूरा नहीं किया हो तो उससे उसी गतिविधि को अगले दिन दोहराने के लिए कहा जाएगा।
- गतिविधि के बाद बच्चों को अध्ययन सामग्री यथास्थान वापस रखनी होती है।

मेरा अनुभव

मैं उन अध्यापकों के दल की सदस्य थी जिनको नली—कली कक्षाओं को सम्हालने के लिए छह दिवसीय प्रशिक्षण के लिए चुना गया था। प्रशिक्षण के बाद जब मैंने कक्षाओं को सम्हालना शुरू किया, तो यह काम मुझे मुश्किल लगा, लेकिन 2—3 महीनों के भीतर ही बच्चों के उत्साह, उनकी गतिविधियों तथा उनकी प्रगति की वजह से यह मुझे अच्छा लगने लगा।

नली—कली कक्षाएँ दूसरी कक्षाओं से अलग हैं और 1, 2 और 3 — तीनों ही कक्षाओं की दक्षताओं में समानताएँ हैं। उदाहरण के लिए गणित की कक्षा 1 में 1 से लेकर 19 तक की संख्याओं को गिनना, लिखना, जोड़ना और घटाना होता है। यही अभ्यास कक्षा 2 के लिए 1 से 99 तक की संख्याओं और कक्षा 3 के लिए 1 से 500 तक की संख्याओं के सन्दर्भ में करने होते हैं।

यहाँ, बच्चे को चूँकि अपनी रफ्तार से सीखने का अवसर होता है, एक प्रतिभाशाली बच्चा तेजी से सीख सकता है और आगे निकल सकता है। इसी तरह हो सकता है कि कुछ बच्चे धीमी शुरुआत करें लेकिन वे धीरे—धीरे रफ्तार पकड़ सकते हैं। मैंने अलग—अलग क्षमताओं वाले बच्चों को साल भर के भीतर अपनी सीखने की गति में उन्नति करते हुए देखा है :

- चूँकि हर बच्चा हर गतिविधि में भाग लेता है, वह अपने अनुभव से सीखता है। (देखो और सीखो; करो और समझो)
- यहाँ आम कक्षाओं की तरह एक साथ ढेर सारे बच्चों का अध्यापन नहीं किया जाता और सीखने की प्रक्रिया के दौरान हर बच्चे पर ध्यान दिया जाता है। मुझे हर बच्चे पर निजी तौर पर ध्यान देना बहुत उपयोगी लगा। दरअसल इससे उन बच्चों की अध्ययन सम्बन्धी खामियों को भी दूर किया जा सकता है जो कक्षा से अनुपस्थित हो जाते हैं।
- जैसा कि मैंने गौर किया, एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपने समूह के दूसरे बच्चों का मार्गदर्शन करता है और इस प्रक्रिया में नेतृत्व की क्षमताओं तथा सहयोग और सामंजस्य की भावनाओं को विकसित करता है।
- इस प्रक्रिया की एक और खासियत यह है कि इसमें बच्चा अध्यापक के मार्गदर्शन में सीखना शुरू करता है, दोस्तों के सहयोग से उसमें मजबूती हासिल करता है और अन्त में स्वावलम्बी होकर गतिविधियाँ करने लगता है।
- कक्षा में विद्यार्थियों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होती है। यह सीखने की रफ्तार के प्रति सजगता पैदा करती है और उनको ज्यादा से ज्यादा सीखने को प्रोत्साहित करती है तथा उनमें आत्मविश्वास जगाती है। सीखना इस तरह उनके लिए एक चुनौती भरा काम हो जाता है। शारीरिक चुनौती से जूझ रहे विद्यार्थी भी इस प्रक्रिया से प्रोत्साहित होते हैं।

नली–कली पद्धति की चुनौतियाँ

नली–कली की उपर्युक्त सकारात्मकताओं/शक्तियों के बावजूद अध्यापकों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है :

- अगर विद्यार्थियों की संख्या 30 से ज्यादा होती है, तो कक्षा को सम्हालना मुश्किल होता है।
- चूँकि अध्यापकों को हर दिन के सत्रों के दौरान पूरे वक्त कक्षा में मौजूद रहना होता है, यह शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्तरों पर काफी थका देने वाला काम साबित होता है।
- अध्यापकों को ऐसी कक्षा को सम्हालने में मुश्किल हो सकती है जिसमें तीनों कक्षाओं के विद्यार्थी सीखने वाले समूह में होते हैं और हर कक्षा के विद्यार्थियों को शिक्षण के कई सारे बिन्दु पढ़ाने होते हैं।
- कक्षा 1 और 2 की क्षमताओं में समानताएँ होती हैं, लेकिन कक्षा 3 के अध्यापन का स्तर तुलनात्मक रूप से ऊँचा होता है और इसलिए कक्षा 3 को अध्यापन के लिए अलग करना बेहतर होगा।

निष्कर्ष

यह सही है कि इस शिक्षण पद्धति में चुनौतियाँ हैं, लेकिन शिक्षा विभाग द्वारा लागू की गई दूसरी योजनाओं के मुकाबले में नली–कली उत्कृष्ट शिक्षा के मामले में कहीं ज्यादा कारगर है। कार्ड, चार्ट, कार्य–पुस्तिकाएँ, रीडर और डिस्कें अध्यापन में बेहद कारगर साबित होती हैं और इनको तैयार करने में कई अध्यापकों, शिक्षा–विशेषज्ञों अधिकारियों ने मशक्कत की है। इनमें लगातार संशोधन जारी है और संशोधनों की सूचना अध्यापकों को दूरसंचार के माध्यम से दी जा रही है। इसी के साथ, कक्षाओं को संचालित करने के दौरान अध्यापकों के सामने पेश आने वाली मुश्किलों पर गौर किया जा रहा है और उनके समाधान खोजे जा रहे हैं।

यहाँ तक कि ऐसे विद्यार्थी के लिए जो एक अकादमिक वर्ष में सारे माइलस्टोन को हासिल नहीं कर सका है, यह पद्धति इजाजत देती है कि वह छूट गए माइलस्टोन को अगले अकादमिक वर्ष की शुरुआत में पूरा कर ले और इसके बाद अगले साल के माइलस्टोन को सीखना शुरू करे।

मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत जारी रहने वाली है। बच्चे का मूल्यांकन प्रत्येक माइलस्टोन के अन्त में खेलों, गतिविधियों और कार्ड में दिए गए सवालों के मौखिक जवाबों के माध्यम से होता है। बच्चे औपचारिक परीक्षा के आतंक से मुक्त होते हैं और शिक्षण के एक स्वतन्त्र तथा आत्मीय वातावरण में अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं।

मैंने अध्यापन की इस पद्धति से किसी भी दूसरी पद्धति के मुकाबले कहीं ज्यादा सन्तोष हासिल किया है।

पद्मजा *गवर्नमेण्ट सीनियर प्राइमरी स्कूल, चन्द्रनगर, कुमारस्वामी लेआऊट, बंगलौर साऊथ जोन – 1 में हैड मिस्ट्रेस हैं। उन्होंने 1994 में अध्यापन की शुरुआत की और इस स्कूल की हैड मिस्ट्रेस बन गईं जो वर्ष 2002–03 में एसएसए के तहत जूनियर प्राइमरी स्कूल के रूप में आरम्भ हुआ था। उस समय कक्षा 1 से 4 तक के विद्यार्थियों की कुल संख्या 48 थी। विभाग, दानदाताओं और अध्यापकों के संरक्षण की वजह से स्कूल धीरे–धीरे विकसित होता चला गया और उसने सीनियर प्राइमरी स्कूल का स्तर हासिल कर लिया। अब इस स्कूल में 1 से 8 तक कक्षाएँ हैं जिनमें 350 से ज्यादा विद्यार्थी हैं। पद्मजा पिछले पाँच सालों से नली–कली अध्यापिका हैं। उनसे 91 9731731600 पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: मदन सोनी*